चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि. भूमि | 19-7-23 | 10 | 1-6 |

## अधिक बरसात में विशेष सलाह का पालन कर कपास में नुकसान होने से बचाएं : प्रो. काम्बोज

# हकृवि के वैज्ञानिक दे रहे कपास की फसल बचाने के टिप्स

हरिभूमि न्यूज ⏩ हिसार

बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बी टी कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डीएपी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डीएपी की बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। यह सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है। कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिडकाव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें।

उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में स्प्रे के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सैंडविट, सेलवेट 99 या टीपोल की 60

### दो फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं : डॉ. मलिक

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह मलिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए दो फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमे फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को तीन दिनों के अंतराल पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12-15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक की फसल में एक छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडीन या अचूक) की 5 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें।

मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता हैं। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति तीन पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लॉनिकामिड (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

हिसार। कपास की फसल का फाइल फोटो। फोटो : हरिभूमि

### बनछटियां का प्रबंधन नरमा की फसल में डोडी निकलने से पहले ही करें : डॉ. शर्मा

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछटियां रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। गुलाबी सुंडी अद-खिले टिंडों में नरमे के दो बीजों (बिनौले) को जोड़कर भंडारित लकड़ियों में निवास करती है। इसलिए बनछटियां का प्रबंधन नरमा की फसल में बौकी/डोडी निकलने से पहले ही करें। नरमा की बनछटियां से टिंडे एवं पत्ते झाड़कर नष्ट कर दें। उन्होंने बताया कि फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी सुंडी से प्रभावित पौधों पर लगे रोजेटी फूल (गुलाबनुमा फूल) को समय समय पर एकत्रित कर नष्ट करते रहें।

### प्रोफेनोफोस 50 ईसी का करें छिड़काव : डॉ. जाखड़

*कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/ कैरिना) 50 ईसी की तीन मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। अगला छिड़काव जरुरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 एएफ की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 10-12 दिनों बाद करें। पैराविल्ट के लिए किसानों को लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर दो ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।*

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 19.7.23 | 3 | 1-5 |

खेतीबाड़ी

बारिश में कपास की फसल को बचाने के लिए एचएयू की तरफ से जारी की गई गाइडलाइन

# फेरोमोन ट्रैप में 12-15 पतंगे आते हैं तो करें कीटनाशक का छिड़काव

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। बारिश के दिनों में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ जाता है। इसकी निगरानी के लिए प्रति एकड़ दो फेरोमोन ट्रैप लगाएं। जून से अगस्त के बीच अगर ट्रैप में तीन दिन में 12-15 पतंगें दिखते हैं तो खेत में कीटनाशक का छिड़काव जरूर करें। इसके अलावा बारिश के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर बिजाई के समय डीएपी डाल दी है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में एक बैग यूरिया प्रति एकड़ में छिड़काव करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है।

ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने किसानों को दी है। कुलपति ने कहा कि फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव बिजाई के 100 दिन बाद ही करें। अधिक बारिश होने पर खेत से पानी निकासी की व्यवस्था करें।

हिसार। एचएयू कैंपस में लगा कपास।

जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता है। 60 दिन से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लोनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

## खेत के आसपास से हटा दें नरमा की बनछटिया

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछटिया को हटा दें। खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है तो उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इन खेतों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। गुलाबी सुंडी अधखिले टिंडों में नरमे के दो बीजों (बिनौले) को जोड़कर भंडारित लकड़ियों में रहती है। इसलिए बनछटियों का प्रबंधन नरमा की फसल में बौकी/डोडी निकलने से पहले ही करें। नरमा की बनछटिया से टिंडे एवं पत्तें झाड़कर नष्ट कर दें। उन्होंने बताया कि फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी सुंडी से प्रभावित पौधों पर लगे रोजेटी फूल (गुलाबनुमा फूल) को समय समय पर एकत्रित कर नष्ट करते रहें।

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह मलिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमें फंसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों की 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12-15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक की फसल में नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडीन या अचूक) की 5 एमएल प्रति लीटर पानी के हिसाब से एक छिड़काव करें।

कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10% होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस 50 ईसी की 3 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। अगला छिड़काव जरूरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 एएफ की 4 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सच कहूं | 19.7.23 | 5 | 4-8 |

देसी कपास में कोई भी खाद डालने की नहीं आवश्यकता: प्रो. बीआर काम्बोज

# वैज्ञानिक टिप्स: अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी करें सुनिश्चित

सच कहूँ/संदीप सिंहमार

हिसार। बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डी ए पी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डीएपी की बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है।

कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में स्प्रै के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डविट, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता है। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

## गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह मलिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमे फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12-15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक की फसल में एक छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडीन या अचूक) की 5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें। उन्होंने बताया कि इसके अलावा कपास की फसल चक्र में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है।

## सफेद मक्खी पर पूर्ण रूप से नियंत्रण करें

पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें।

## कपास की फसल 60 दिनों की होने के बाद इस कीटनाशक का करें प्रयोग

कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरुरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 एएफ की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 10-12 दिनों बाद करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को उखाड़ कर जमीन में दबा देंपैराविल्ट के लिए किसानों को लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें। जीवाणु अंगमारी रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें। इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400-500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अजीत समाचार | 19.7.22 | 5 | 3-6 |

# अधिक बरसात में विशेष सलाह का पालन कर कपास में नुकसान होने से बचाएं : प्रो. काम्बोज

## हरियाणा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दे रहे हैं कपास की फसल को बचाने के टिप्स

हिसार, 18 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डी ए पी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बी टी कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डी ए पी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डी ए पी की बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चैधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो; बी; आर काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है।कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एन. पी. के. इत्यादि का छिडकाव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में स्प्रै के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डवित, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता हैं। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लोंनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें। अनुसंधान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। कीट वैज्ञानिक डॉ अनिल जाखड ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरुरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 ए.एफ. की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 10-12 दिनों बाद करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें। इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400-500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेदम क्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें।

कपास की फसल।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 19.7.23 | 4 | 1-2 |

## अधिक बरसात में कपास को नुक्सान होने से बचाएं : प्रो. काम्बोज

हिसार, 18 जुलाई (ब्यूरो): बरसात के बाद कपास में निराई-गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डी.ए.पी. डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बी.टी. कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डी.ए.पी. नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डी.ए.पी. डालें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है।

*कपास की फसल का फोटो।*

कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एन.पी.के. इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के 100 दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में स्प्रे के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डविट, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तैला का भी प्रकोप हो जाता है। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्ल्यू.जी. की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक ट्रिब्यून | 19.7.23 | 19.7.23 | 3-4 |

# अधिक बरसात में ऐसे बचाएं कपास की फसल

हिसार 18 जुलाई (हप्र)

**हरियाणा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दे रहे हैं कपास की फसल को बचाने के टिप्स**

बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डीएपी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डीएपी डालें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है।

यह सलाह चैधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है। कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिडकाव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में स्प्रै के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डवित, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं।

जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता हैं। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

अनुसंधान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सिटी पल्स न्यूज | 18.07.2023 | -- | -- |

# हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने जारी की कपास की फसल के लिए टिप्स

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डी ए पी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डी ए पी की बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विधविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों के लिए जारी की है। उन्होंने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिडकाव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें।

अनुसंधान निदेशक डॉ जीत राम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की

बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। कीट वैज्ञानिक डॉ अनिल जाखड़ ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। पैराविल्ट के लिए किसानों को लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें। पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| समस्त हरियाणा न्यूज | 18.07.2023 | -- | -- |


## हरियाणा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दे रहे हैं कपास की फसल को बचाने के टिप्स

# अत्यधीक बरसात में विशेष सलाह का पालन करते हुए कपास में नुकसान होने से बचाएं : प्रो. बी आर काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 18 जुलाई। बरसात के बाद कपास में निराई गु ?ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डी ए पी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बी टी कपास में एक बैग यूरिया का छि ?काव करें। अगर बिजाई के समय डी ए पी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डी ए पी की बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चैधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है। कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एन. पी. के. इत्यादि का छिडकाव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में स्प्रे के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डवित, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता हैं। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें। अनुसंधान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। उन्होंने बताया कि गुलाबी सुण्डी अद-खिले टिंडों में नरमे के दो बीजों (बिनौले) को जोड़कर 'भंडारित लकड़ियों में निवास करती है। इसलिए बनछटिया का प्रबंधन नरमा की फसल में बौकी/डोडी निकलने से पहले ही करें। नरमा की बनछटिया से टिंडे एवं पत्ते झाड़कर नष्ट कर दें। उन्होंने बताया कि फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी सुण्डी से प्रभावित पौधों पर लगे रोजेटी फूल (गुलाबनुमा फूल) को समय समय पर एकत्रित कर नष्ट करते रहें। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ करमल सिंह मलिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमे फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12-15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता हैं। 60 दिनों तक की फसल में एक छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडीन या अचूक) की 5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें। उन्होंने बताया कि इसके अलावा कपास की फसल चक्र में

### निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है

कीट वैज्ञानिक डॉ अनिल जाखड ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन /सेल्क्रोन/ कैरिना) 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरूरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 ए.एफ. की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 10-12 दिनों बाद करें। पैराविल्ट के लिए किसानों को लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छि ?काव करें। जीवाणु अंगमारी रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़कर जमीन में दबा दें। इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400 - 500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें। पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पांच बजे न्यूज | 18.07.2023 | -- | -- |

# हकृवि वैज्ञानिकों ने कपास की फसल को बचाने के दिए टिप्स

**पांच बजे न्यूज**

हिसार। बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बी टी कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डी ए पी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डी ए पी को बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है।

कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में सौ के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डोविट, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता है। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लोनिकामिड (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

अनुसंधान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछंटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। उन्होंने बताया कि गुलाबी सुण्डी अद-खिले टिंडों में नरमे के दो बीजों (बिनौले) को जोड़कर 'पंडारित लकड़ियों में निवास करती है। इसलिए बनछंटिया का प्रबंधन नरमा की फसल में बौकी/डोडी निकलने से पहले ही करें। नरमा की बनछंटिया में टिंडे एवं पत्तें झाड़कर नष्ट कर दें। उन्होंने बताया कि फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी सुण्डी से प्रभावित पौधों पर लगे रोजेटी फूल (गुलाबनुमा फूल) को समय समय पर एकत्रित कर नष्ट करते रहें।

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ करमल सिंह मलिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमे फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12-15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते है तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक की फसल में एक छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बोसिडीन या अचूक) की 5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें। उन्होंने बताया कि इसके अलावा कपास की फसल चक्र में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है;

कीट वैज्ञानिक डॉ अनिल जाखड ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/ कैरिना) 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरुरत पड़ने पर क्यूनालफास 20 ए.एफ. की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 10-12 दिनों बाद करें।

- पैराविल्ट के लिए किसानों को लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें। जीवाणु अंगमारी रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें। इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वास्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400 - 500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें। पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप में नियंत्रण करें।